ब्रह्मोस तो शुरुआत है! भारत का 50 हजार करोड़ का डिफेंस एक्सपोर्ट प्लान

विषय सूची (Table of Contents):

>> १. ब्रह्मोस के बाद नए युग की शुरुआत रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा भारत का रक्षा निर्या...
>> वित्त वर्ष 2026 के अभूतपूर्व आंकड़े और रिकॉर्ड ग्रोथ...
>> 80 से अधिक देशों में भारतीय हथियारों का विस्तार...
>> २. युद्ध के बदलते तौर-तरीके अब ड्रोन और ऑटोनोमस सिस्टम की है सबसे ज़्यादा डिमांड...
>> पारंपरिक हथियारों से आधुनिक युद्धक्षेत्र की ओर बदलाव...
>> वैश्विक सेनाओं की प्राथमिकता और किफ़ायती समाधान...
>> ३. काल जैसे घातक ड्रोन्स से दुनिया को अपनी ताकत दिखा रहा भारत...
>> आईजी डिफेंस का काल ड्रोन क्षमताएं और खासियतें...
>> अंतरराष्ट्रीय निर्यात की तैयारी...
>> ४. महंगे हथियारों की जगह सस्ते और सटीक विकल्पों ने बदला युद्ध का अर्थशास्त्र...
>> युद्ध का नया अर्थशास्त्र (Economics of Modern Warfare)...
>> ५. सिर्फ ढांचा ही नहीं, स्मार्ट हथियारों का दिमाग भी तैयार कर रही हैं भारतीय क...
>> स्मार्ट हथियारों की इंटेलिजेंस लेयर और इलेक्ट्रॉनिक्स...
>> हार्डवेयर असेंबली से कोर टेक्नोलॉजी का निर्यात...
>> ६. पिनाका, आकाश और स्वाति रिडार रक्षा उपकरणों के वैश्विक बाजार में भारत का बढ़ता...
>> वैश्विक बाजार में लोकप्रिय प्रमुख भारतीय हथियार...
>> ७. २०३० तक ५० हजार करोड़ रुपये का महा-लक्ष्य ऐसे हासिल होगा डिफेंस एक्सपोर्ट का...
>> मजबूत एमएसएमई और प्राइवेट इकोसिस्टम की भूमिका...
>> निष्कर्ष...
>> जनता के सवाल (FAQs)...

भारतीय रक्षा क्षेत्र (Indian Defense Sector) में इस समय एक ऐतिहासिक क्रांति देखने को मिल रही है। कभी दुनिया के सबसे बड़े हथियार आयातकों में शुमार होने वाला भारत, अब वैश्विक रक्षा बाजार में एक प्रमुख निर्यातक बनकर उभर रहा है। अब तक भारत की डिफेंस एक्सपोर्ट स्टोरी का सबसे बड़ा सितारा सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस (BrahMos) रही है, जिसने दुनिया भर में भारत की तकनीक का परचम लहराया है।

हालांकि, रक्षा मंत्रालय और भारतीय रक्षा निर्माताओं की नई रणनीति यह दर्शाती है कि ब्रह्मोस तो महज एक शुरुआत थी। आने वाले वर्षों में भारत अपने रक्षा निर्यात बास्केट को व्यापक बनाते हुए अत्याधुनिक ड्रोन, ऑटोनोमस सिस्टम, स्मार्ट इलेक्ट्रॉनिक्स और प्रिसिजिन-गाइडेड हथियारों का दुनिया में परचम लहराने के लिए पूरी तरह तैयार है।

१. ब्रह्मोस के बाद नए युग की शुरुआत: रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा

भारत के रक्षा निर्यात के आंकड़ों ने वैश्विक बाजार को हैरान कर दिया है। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता और स्वदेशी निर्माण (Make in India) को दिए गए प्रोत्साहन के कारण देश के रक्षा उद्योग ने अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है।

वित्त वर्ष 2026 के अभूतपूर्व आंकड़े और रिकॉर्ड ग्रोथ

ताजा आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 (FY 2026) में भारत का रक्षा निर्यात62.66 प्रतिशत की भारी उछालके साथ38,424 करोड़ रुपयेके अब तक के सबसे उच्चतम रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। इससे पिछले वित्त वर्ष में यह आंकड़ा 23,622 करोड़ रुपये था, जो यह साबित करता है कि भारतीय सैन्य उपकरणों की मांग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बढ़ रही है।

80 से अधिक देशों में भारतीय हथियारों का विस्तार

भारतीय रक्षा सामग्री का दायरा अब केवल कुछ चुनिंदा मित्र देशों तक सीमित नहीं है। वर्तमान में भारत दुनिया के80 से अधिक देशोंको विभिन्न प्रकार के सैन्य उपकरण और रक्षा तकनीक निर्यात कर रहा है। इसके साथ ही, भारत से रक्षा निर्यात करने वाली निजी और सरकारी कंपनियों (Exporters) की संख्या भी 128 से बढ़कर 145 हो गई है।

सरकारी नीतियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने से घरेलू कंपनियों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में उतरने का नया हौसला मिला है। देश में कानूनी नियमों और निर्यात प्रक्रियाओं की जानकारी के लिए आपइंडिया कोड: भारत के सभी कानून और अधिनियम अब एक ही पोर्टल पर!चेक कर सकते हैं।

२. युद्ध के बदलते तौर-तरीके: अब ड्रोन और ऑटोनोमस सिस्टम की ह

वैश्विक स्तर पर हाल के वर्षों में हुए सैन्य संघर्षों ने पारंपरिक युद्धक रणनीतियों को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। आज के युद्धक्षेत्र में भारी-भरकम टैंकों और बेहद महंगे लड़ाकू विमानों से ज्यादा प्रभाव छोटे, सटीक और स्वायत्त हथियारों का देखा जा रहा है।

पारंपरिक हथियारों से आधुनिक युद्धक्षेत्र की ओर बदलाव

आधुनिक युद्ध अब केवल बड़े मिसाइल हमलों तक सीमित नहीं हैं। अब रणनीति में बदलाव आ चुका है और अग्रिम मोर्चे पर

निम्नलिखित सैन्य तकनीकों का प्रभुत्व बढ़ गया है:

>> अनमैन्ड एरियल व्हीकल (UAVs Drones):टोही और हमले दोनों अभियानों के लिए अनिवार्य।

>> लॉयटरिंग म्यूनिशन्स (Loitering Munitions):जिन्हें सुसाइड ड्रोन भी कहा जाता है, जो लक्ष्य की पहचान कर सटीक प्रहार करते हैं।

>> इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर (EW) सिस्टम:दुश्मन के संचार और रडार सिग्नल को जाम करने वाली तकनीक।

>> एयर-डिफेंस और काउंटर-UAS सिस्टम:दुश्मन के ड्रोन्स और मिसाइलों को बेअसर करने वाले सुरक्षा ढाँचे।

वैश्विक सेनाओं की प्राथमिकता और किफ़ायती समाधान

दुनिया भर की सेनाएं अब ऐसे सैन्य समाधानों की तलाश में हैं जो लंबी दूरी तक सटीक मार कर सकें, स्वचालन (Automation) से लैस हों और सबसे महत्वपूर्ण पारंपरिक मिसाइल प्रणालियों की तुलना में काफी किफ़ायती हों। भारत इस वैश्विक बदलाव को समझकर सटीक रणनीतिक उत्पादन कर रहा है।

३. काल जैसे घातक ड्रोन्स से दुनिया को अपनी ताकत दिखा रहा भ

भारतीय प्राइवेट डिफेंस सेक्टर अब ऐसे अत्याधुनिक हथियार बना रहा है जो दुनिया के विकसित देशों की कंपनियों को सीधी टक्कर दे रहे हैं। नोएडा स्थित निजी रक्षा कंपनीआईजी डिफेंस (IG Defence)द्वारा विकसित किया गया लंबी दूरी का अटैक ड्रोन काल (Kaal) इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

आईजी डिफेंस का काल ड्रोन: क्षमताएं और खासियतें

आईजी डिफेंस का काल एक वन-वे अटैक ड्रोन (Kamikaze Drone) है, जो दुश्मन के ठिकाने पर जाकर खुद विस्फोट कर देता है। इसकी तकनीकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

>> मारक क्षमता (Range):यह ड्रोन 1,000 किलोमीटर तक की दूरी तय करने में सक्षम है।

>> फ्लाइट टाइम (Endurance):यह 7 से 8 घंटे तक लगातार हवा में रहकर गश्त कर सकता है।

>> पेलोड क्षमता (Payload):अपने साथ 50 किलोग्राम तक विस्फोटक या वॉरहेड ले जाने में सक्षम है।

अंतरराष्ट्रीय निर्यात की तैयारी

आईजी डिफेंस के संस्थापक और सीईओ बोधसित्व संघप्रिय के अनुसार, आवश्यक सरकारी स्वीकृतियां और मंजूरी मिलने के बाद काल ड्रोन को अंतरराष्ट्रीय निर्यात के लिए पेश किया जा रहा है। यह तकनीक साबित करती है कि भारतीय स्टार्ट-अप्स भी वैश्विक स्तर की स्वायत्त रक्षा प्रणालियाँ बना रहे हैं।

४. महंगे हथियारों की जगह सस्ते और सटीक विकल्पों ने बदला युद्

हालिया वैश्विक युद्धों ने यह साबित कर दिया है कि सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित दुश्मन के किसी रणनीतिक ठिकाने या एयर-डिफेंस रडार को नष्ट करने के लिए हर बार करोड़ों डॉलर मूल्य की क्रूज मिसाइल दागना आर्थिक रूप से तर्कसंगत नहीं है।

युद्ध का नया अर्थशास्त्र (Economics of Modern Warfare)

यदि कुछ लाख रुपये का ड्रोन किसी करोड़ों डॉलर के टैंक या रडार सिस्टम को तबाह कर सकता है, तो युद्ध का पलड़ा ड्रोन तकनीक की ओर झुक जाता है। सस्ते, सटीक और ऑटोनोमस हथियारों ने युद्ध के अर्थशास्त्र (Economics of War) को बदल दिया है।

भारतीय निर्माता इसी अवसर को भुनाने में जुटे हैं। लंबी दूरी तक सटीक हमला करने वाले किफ़ायती ड्रोन और लॉयटरिंग म्यूनिशन्स वैश्विक बाजार में भारतीय कंपनियों के लिए अरबों डॉलर के नए दरवाजे खोल रहे हैं।

५. सिर्फ ढांचा ही नहीं, स्मार्ट हथियारों का दिमाग भी तैयार

रक्षा निर्यात के मामले में आमतौर पर सुर्खियां पूरी मिसाइल, तोप या लड़ाकू विमान बटोरते हैं। लेकिन किसी भी आधुनिक हथियार की असली मारक क्षमता उसका भौतिक ढांचा (Hardware Shell) नहीं, बल्कि उसके अंदर लगा इलेक्ट्रॉनिक्स और गाइडेंस सिस्टम होता है।

स्मार्ट हथियारों की इंटेलिजेंस लेयर और इलेक्ट्रॉनिक्स

एम्यूनिशन सिस्टम्स (Ammunick Systems) जैसी भारतीय कंपनियां इसी इंटेलीजेंस लेयर पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। कंपनी की सीईओ प्रियंका सिंघल के अनुसार, भारत की रक्षा निर्यात क्षमता का एक बहुत बड़ा हिस्सा उन इलेक्ट्रॉनिक्स, गाइडेंस किट्स, सेंसर्स और फ्यूज (Fuzes) में निहित है जो एक साधारण गोले या मिसाइल को स्मार्ट बनाते हैं।

हार्डवेयर असेंबली से कोर टेक्नोलॉजी का निर्यात

भारत ने हथियारों के बॉडी स्ट्रक्चर के निर्माण में महारत हासिल कर ली है। अब अगला कदम उस दिमाग (Micro-electronics AI algorithms) को निर्यात करना है जो इन हथियारों को नियंत्रित करता है। भविष्य में पूरी मिसाइल बेचने के बजाय उसके भीतर का महत्वपूर्ण इंटेलिजेंट कंपोनेंट बेचना अधिक लाभदायक और बड़ा बाजार साबित हो सकता है।

६. पिनाका, आकाश और स्वाति रडार: रक्षा उपकरणों के वैश्विक बाज

भारत का रक्षा निर्यात बास्केट अब केवल एक-दो उत्पादों तक सीमित नहीं है। भारत अब थल, नभ और वायु तीनों सेनाओं के उपयोग में आने वाले जटिल और विश्वसनीय हथियारों की आपूर्ति कर रहा है।

वैश्विक बाजार में लोकप्रिय प्रमुख भारतीय हथियार

>> पिनाका (Pinaka MBRL):मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम, जिसकी सटीकता और घातक मारक क्षमता की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारी मांग है।

>> आकाश एयर डिफेंस सिस्टम (Akash Surface-to-Air Missile):कई मित्र देश अपनी हवाई सीमाओं की सुरक्षा के लिए आकाश मिसाइल डिफेंस सिस्टम में गहरी रुचि दिखा चुके हैं।

>> स्वाति रडार (Swathi Weapon Locating Radar):दुश्मन की तोपों और रॉकेट लॉन्चरों की लोकेशन का सटीक पता लगाने वाला स्वदेशी रडार।

>> ATAGS (Advanced Towed Artillery Gun System):भारत में निर्मित 155mm की आधुनिक आर्टिलरी गन (तोप)।

देश के बुनियादी ढांचे और राष्ट्रीय संसाधनों की सुरक्षा के साथ-साथ जल और पर्यावरण प्रबंधन भी महत्वपूर्ण पहलू हैं। इस दिशा में सरकार के प्रयासों की जानकारी के लिए पढ़ेंभारत में जल सुरक्षा, जल संरक्षण और प्रबंधन को नई दिशा।

७. २०३० तक ५० हजार करोड़ रुपये का महा-लक्ष्य: ऐसे हासिल होगा

भारत सरकार और रक्षा मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2029-30 (वर्ष 2030) तक देश के रक्षा निर्यात को50,000 करोड़ रुपयेप्रति वर्ष तक पहुँचाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। रक्षा सचिव के हालिया बयानों के अनुसार, जिस तेजी से उद्योग प्रगति कर रहा है, यह लक्ष्य आसानी से हासिल किया जा सकता है।

मजबूत एमएसएमई और प्राइवेट इकोसिस्टम की भूमिका

50 हजार करोड़ का आंकड़ा केवल बड़ी सरकारी कंपनियों से हासिल नहीं होगा। इसके लिए देश में एमएसएमई (MSMEs), निजी रक्षा स्टार्ट-अप्स, सेंसर निर्माताओं, ड्रोन डेवलपर्स और इलेक्ट्रॉनिक्स सप्लायर्स का एक व्यापक और मजबूत इकोसिस्टम तैयार हो चुका है।

जिस प्रकार सरकार सामाजिक कल्याण के लिए काम कर रही है, उसी तरह रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया जा रहा है। सामाजिक कल्याण की जानकारी हेतु देखेंपीएम आवास योजना: लिस्ट और पात्रता चेक करें, मिलेंगे 1.3 लाख!।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहें तो, भारत की रक्षा निर्यात की कहानी ब्रह्मोस से शुरू होकर अब एक नए और आधुनिक मोड़ पर पहुँच चुकी है। वित्त वर्ष 2026 में 38,424 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड एक्सपोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय सैन्य उपकरण गुणवत्ता, सटीकता और कीमत के मामले में वैश्विक मानकों पर खरे उतर रहे हैं। वर्ष 2030 तक 50,000 करोड़ रुपये का लक्ष्य हासिल कर भारत दुनिया का एक प्रमुख रक्षा निर्यातक देश बनकर उभरेगा।

जनता के सवाल (FAQs)

वित्त वर्ष 2026 (FY 2026) में भारत का रक्षा निर्यात 62.66% की ऐतिहासिक वृद्धि के साथ 38,424 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है।

वर्तमान में भारत दुनिया के 80 से अधिक देशों को विभिन्न प्रकार के रक्षा उपकरण, रडार, हथियार और तकनीक निर्यात कर रहा है।

भारत सरकार ने 2029-30 (FY 2030) तक देश के वार्षिक रक्षा निर्यात को 50,000 करोड़ रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

काल एक वन-वे अटैक ड्रोन है जिसकी मारक क्षमता 1,000 किमी है। यह 7-8 घंटे हवा में रह सकता है और 50 किलोग्राम विस्फोटक ले जा सकता है।

ब्रह्मोस के अलावा आकाश एयर डिफेंस सिस्टम, पिनाका रॉकेट सिस्टम, स्वाति रडार, ATAGS तोपें, ड्रोन और रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख निर्यात उत्पाद हैं।

ड्रोन और स्वायत्त सिस्टम पारंपरिक मिसाइलों की तुलना में बेहद किफ़ायती होते हैं और दूर स्थित लक्ष्यों को सटीकता से नष्ट करने में सक्षम होते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर्स और गाइडेड फ्यूज साधारण हथियारों को स्मार्ट और सटीक बनाते हैं, जिससे वे लक्ष्य पर शत-प्रतिशत

प्रभाव छोड़ते हैं।

भारत में रक्षा सामान का निर्यात करने वाले निर्यातकों कंपनियों की संख्या 128 से बढ़कर अब 145 हो गई है।

जी हाँ, IG Defence और Ammunick Systems जैसी कई भारतीय निजी कंपनियां और स्टार्ट-अप्स ड्रोन, रडार और इलेक्ट्रॉनिक्स बनाकर निर्यात बढ़ा रहे हैं।

मेक इन इंडिया नीति के चलते भारत में स्वदेशी सैन्य निर्माण तेज हुआ है, आयात पर निर्भरता घटी है और निर्यात में रिकॉर्ड 62.66% का उछाल आया है।